धूप में खड़ा ऊँट

यह कहानी उस ऊँट की है जो आजीवन अपने मालिक हलीम के लिए मसालों, खजूर, चाँदी और ऊन के बंडल रेगिस्तान के आर-पार ले जाता रहा है. उसे रेत के टीलों पर चढ़ना पड़ता है, थके होने पर भी दौड़ना पड़ता है, और घंटों धूप में प्रतीक्षा करनी पड़ती है. ऊँट निराशा से भर गया है, क्योंकि उसे लग रहा है कि उसका जीवन हमेशा ऐसे ही चलता रहेगा. लेकिन फिर एक दिन पैगंबर आते हैं......

यह सुंदर कहानी मानवीय समवेदना की विषय में है और इस्लामी हदीस से प्रेरित है.

धूप में खड़ा ऊँट

लाल सागर के पूर्व में, हेजाज़ पहाड़ों के दूसरी ओर, कहीं एक ऊँट रहता था. उसने आजीवन एक व्यापारी, हलीम, के लिए काम किया था और रेगिस्तान के आर-पार उसका सामान ले जाया करता था. अल-हस नखलिस्तान से जेद्दाह के निकट सागर तक वह कई यात्राएँ कर चुका था.
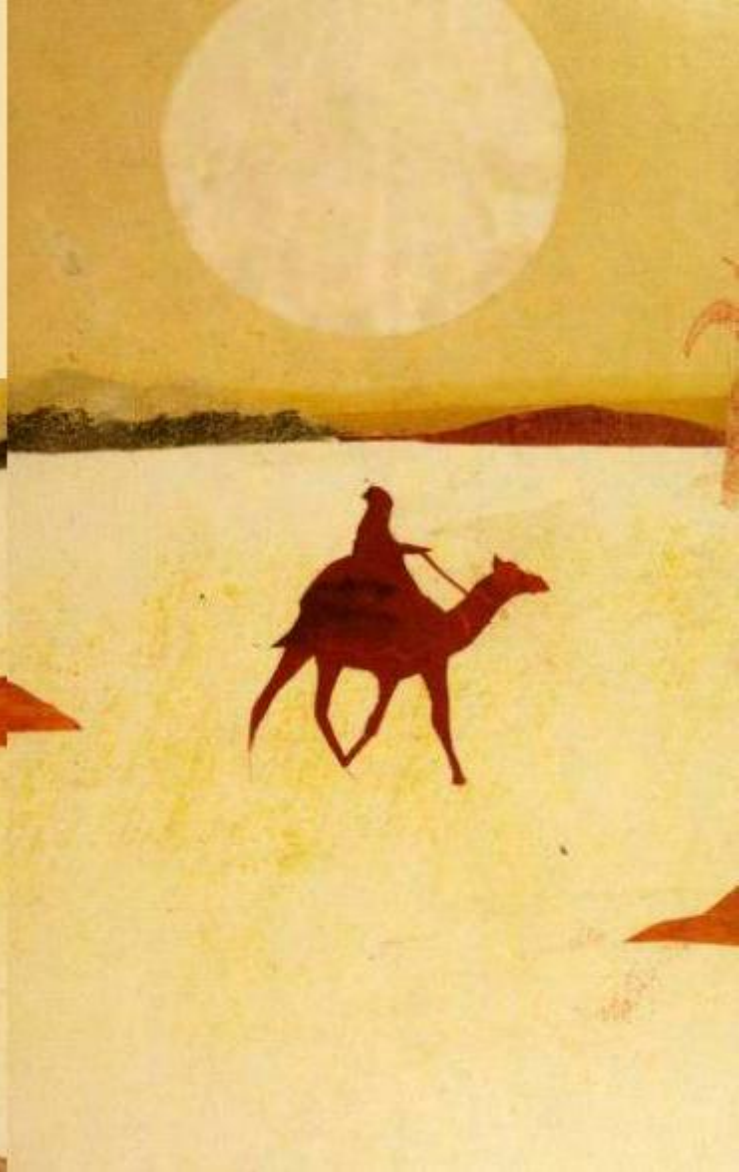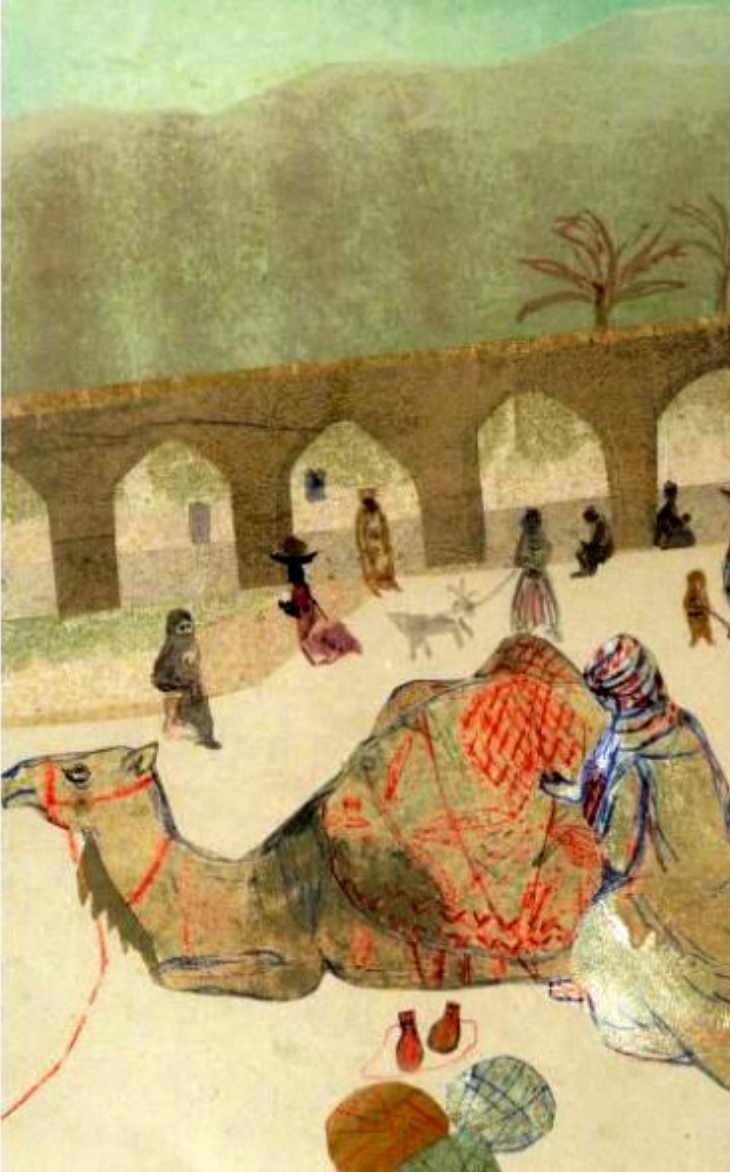
वह ऊँट मसालों, खजूर, लोबान, रेशम, चाँदी और ऊन से भरे बड़े-बड़े बंडल उठा कर ले जाता था. यात्रा शुरू करने से पहले उसका मालिक उसे नीचे बैठने को संकेत करता था. वह उसकी पीठ पर चढ़ जाता था और सामान से भरे बंडल उसकी पीठ पर बाँध देता था. फिर ऊँट खड़ा हो कर चलना शुरू करता था.

ऊँट रेत के ऊंचे टीलों पर चढ़ जाता था और उन टीलों की चोटियों के साथ-साथ चलता था और फिर धीरे-धीरे दूसरी तरफ नीचे उतर जाता था. उतरते समय कभी-कभी लगता था की वह लड़खड़ा जाएगा और सारा सामान गिरा देगा. रेगिस्तान के सपाट हिस्सों में, रात होने के समय, ऊँट का मालिक चिल्ला कर उसे तेज़ चलने का संकेत देता था ताकि उस जगह वह शीघ्र पहुँच जाए जहाँ उसने अपना सामान बेचना होता था.

आराम करने के लिए वह कम ही रुकते थे. ऊँट का सारा जीवन उस रेगिस्तान के आर-पार जाने में ही बीता था. नियत स्थान पहुँचने पर ऊँट खड़े-खड़े ज़ोर से सांस लेता था, उसके मुंह पर झाग जमा हो जाती थी. फिर वह धैर्यपूर्वक तपती धूप में प्रतीक्षा करता था जब कि उसका स्वामी नीचे उतर कर छाया में बैठ कर व्यापारियों के साथ व्यापार की बात करता था.
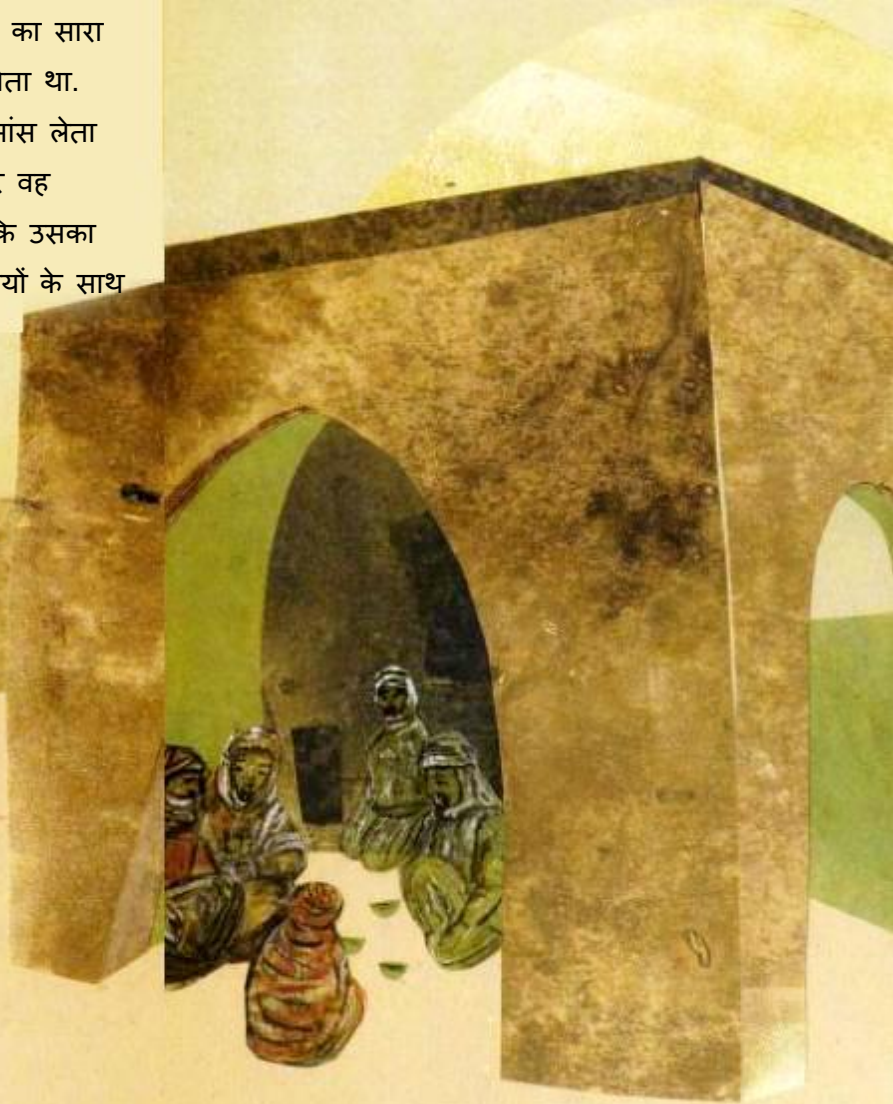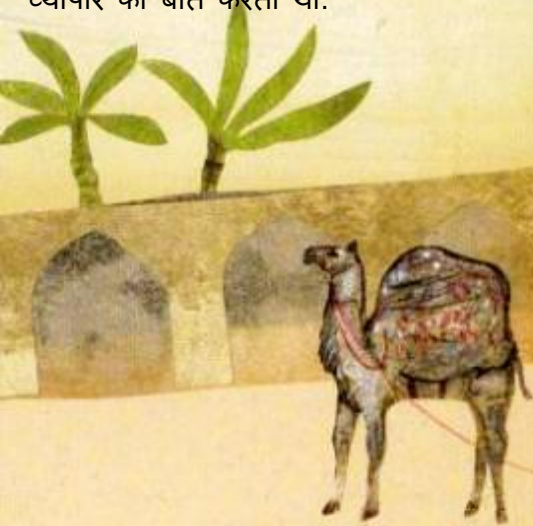
वर्षों तक धूप में इस भाँती रेगिस्तान में यात्राएं
करने के बाद एक दिन अचानक ऊँट को लगा
कि उसकी आँखों से पानी बरस रहा था.
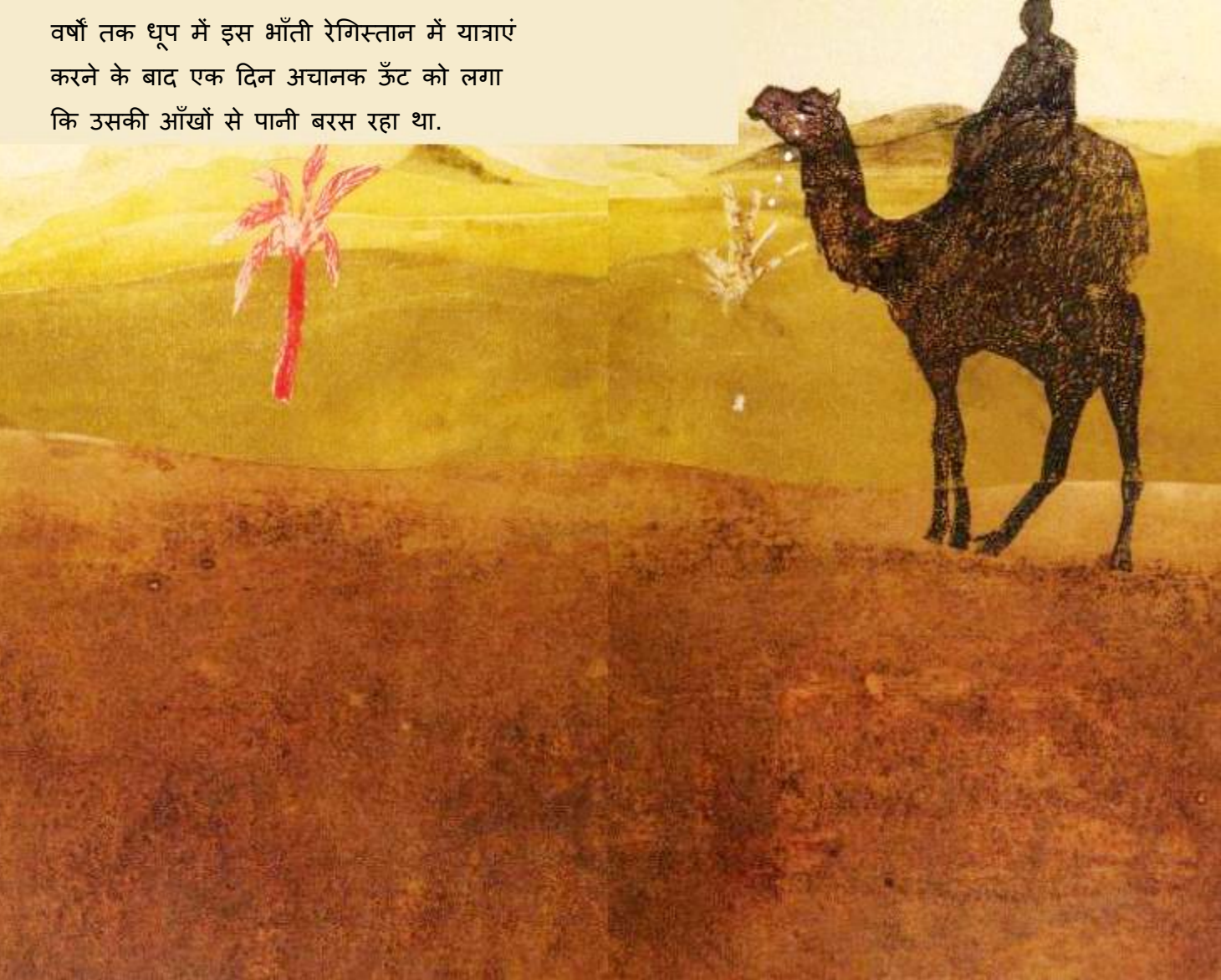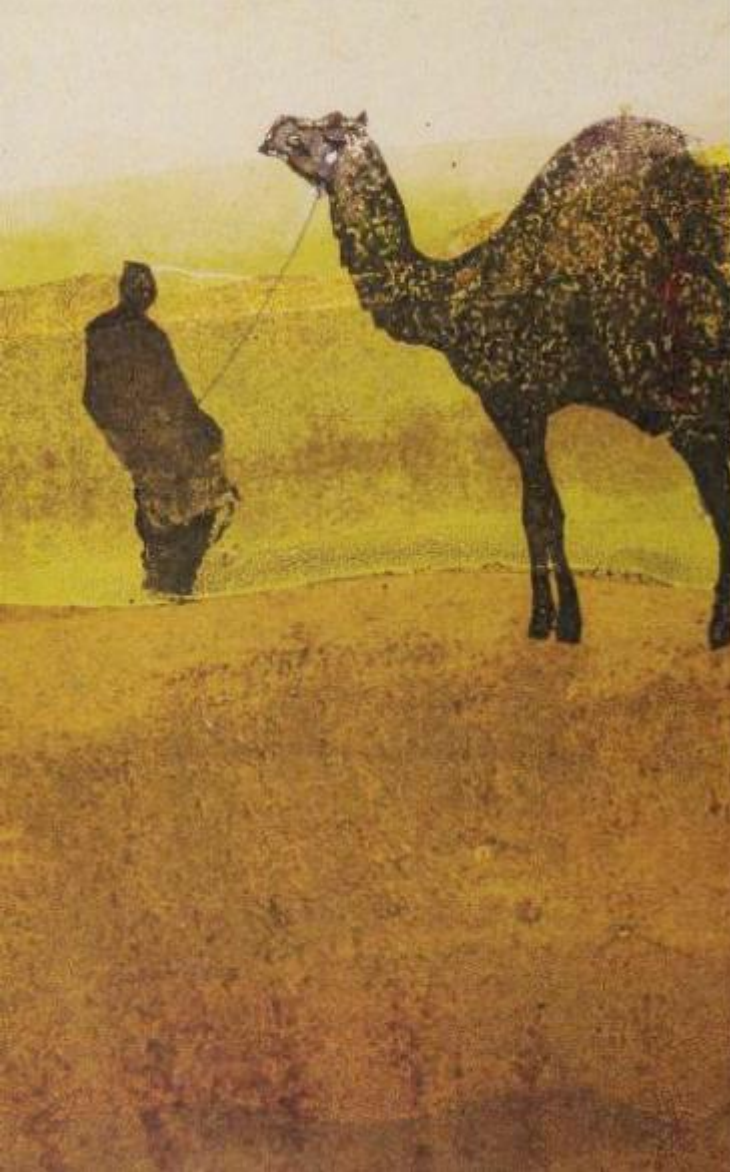
पहले तो ऊँट को समझ ही न आया कि क्या हो रहा था. उसे लगा की हवा में उड़ती रेत उसके चेहरे से टकरा रही थी और उसकी आँखों को चोट पहुंचा रही थी. लेकिन उसकी आँखों से तो आंसू बह रहे थे. ऊँट स्थिर खड़ा हो गया. उसने एक गहरी सांस ली और ज़ोर की आह भरी.

उसका मालिक उसकी पीठ से उतर कर नीचे आ गया और उसे घूर कर देखने लगा. उसे लगा की ऊँट थका हुआ और उदास था. वह बोला, “तुम जितना धीरे चलोगे उतनी ही देर बाद तुम्हें पानी मिलेगा.” इतना कह वह उसकी पीठ पर फिर से सवार गया.

बूढ़े ऊँट ने फिर कभी अपनी उदासी हलीम को न दिखाई. यद्यपि जब हलीम सो जाता था, रात के अँधेरे में ऊँट आहें भरता था. अपनी नकेल खींचता हुआ वह रेत पर चलता जाता था.

वह अपने होंठ काट लेता था और ऊपर आकाश में तारों को देखता था. वह बिलकुल अकेला था, क्योंकि उसे लगता था कि वहां ऐसा कोई न था जिसे वह अपने कष्ट और कठोर परिश्रम की कहानी सुना पाता.

और इसी तरह अगले कुछ महीने वह तपती धूप में रेगिस्तान में यात्रा करता रहा. लेकिन रात के समय भटकती नाव समान वह रेगिस्तान में चल देता. अकसर पीठ पर लदे बोझ के साथ ही वह चल पड़ता और किसी रेत के टीले के पीछे बैठ कर सुबह होने तक आहें भरता. लेकिन उसका मालिक, हलीम, तो हर रात गहरी नींद सोया रहता और दिन में ऊँट पर ऐसे सवार हो जाता जैसे कि कीमती सामान के बंडलों के नीचे कोई ऊँट था ही नहीं और बंडलों पर बैठा वह रेगिस्तान में तैर रहा था.
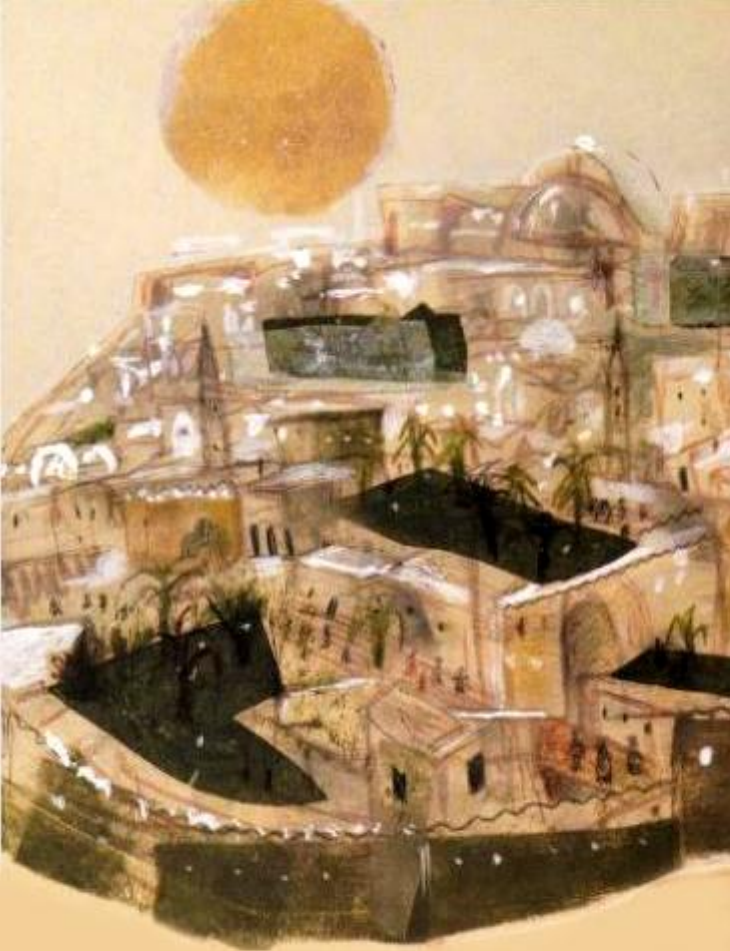
एक दिन वह मदीना के निकट पहुंचे. मदीना सौ बग़ीचों वाला एक सुंदर नगर था और ऐसा कहा जाता था कि पैगंबर वहीं रहते थे. दक्षिण में स्थित नज़रान जाने से पहले व्यापारी मदीना में कुछ देर आराम करना चाहता था.

उन्होंने नगर का द्वार पार किया और एक बगीचे में आये, जहां ताड़ के पेड़ों की छाया में कई लोग इकट्ठे हो रखे थे. हलीम ने ऊँट को धधकती धूप में एक खंबे के साथ बाँध दिया.

फिर वह पेड़ों की छाया में जाकर लेट गया. उसने पानी पिया, थोड़े खजूर खाए और दूसरे व्यापारियों के साथ बातें करने लगा. बातें करने के बाद उसने रेत इकट्ठी कर एक सिरहाना सा बना लिया और पेड़ों की छाया में लेट कर सो गया.
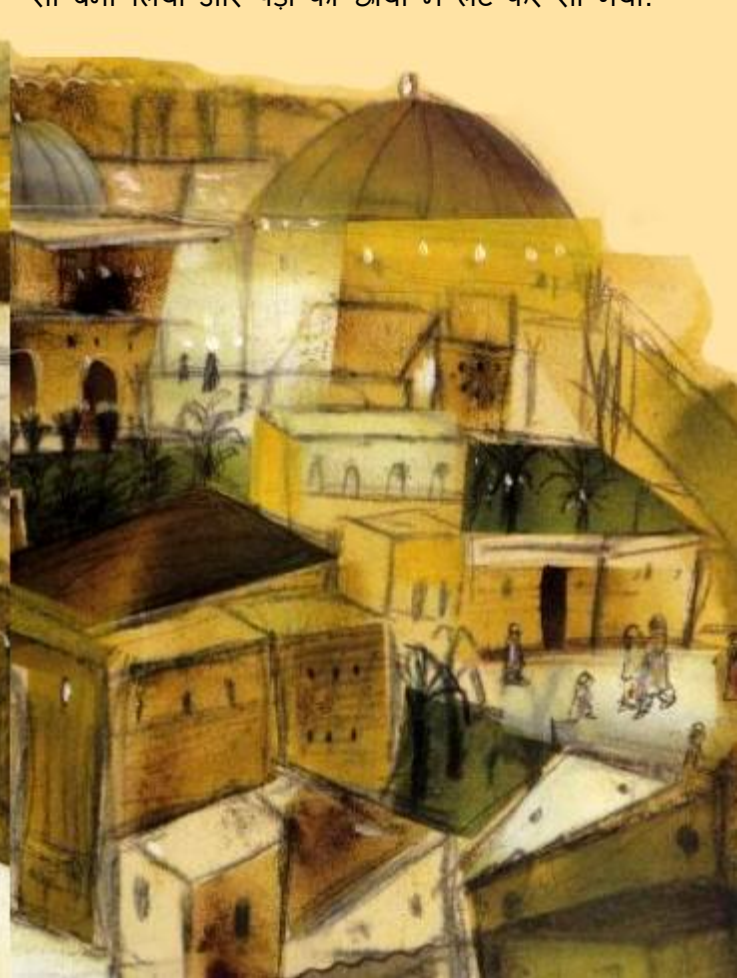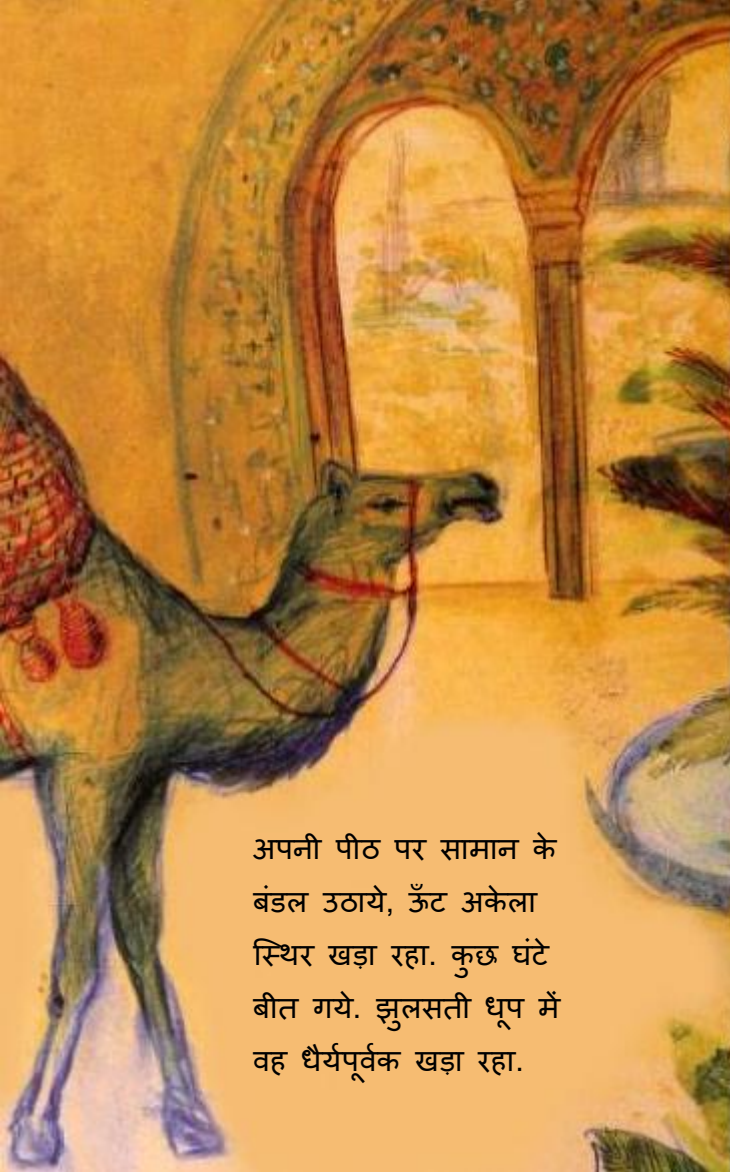
अपनी पीठ पर सामान के बंडल उठाये, ऊँट अकेला स्थिर खड़ा रहा. कुछ घंटे बीत गये. झुलसती धूप में वह धैर्यपूर्वक खड़ा रहा.
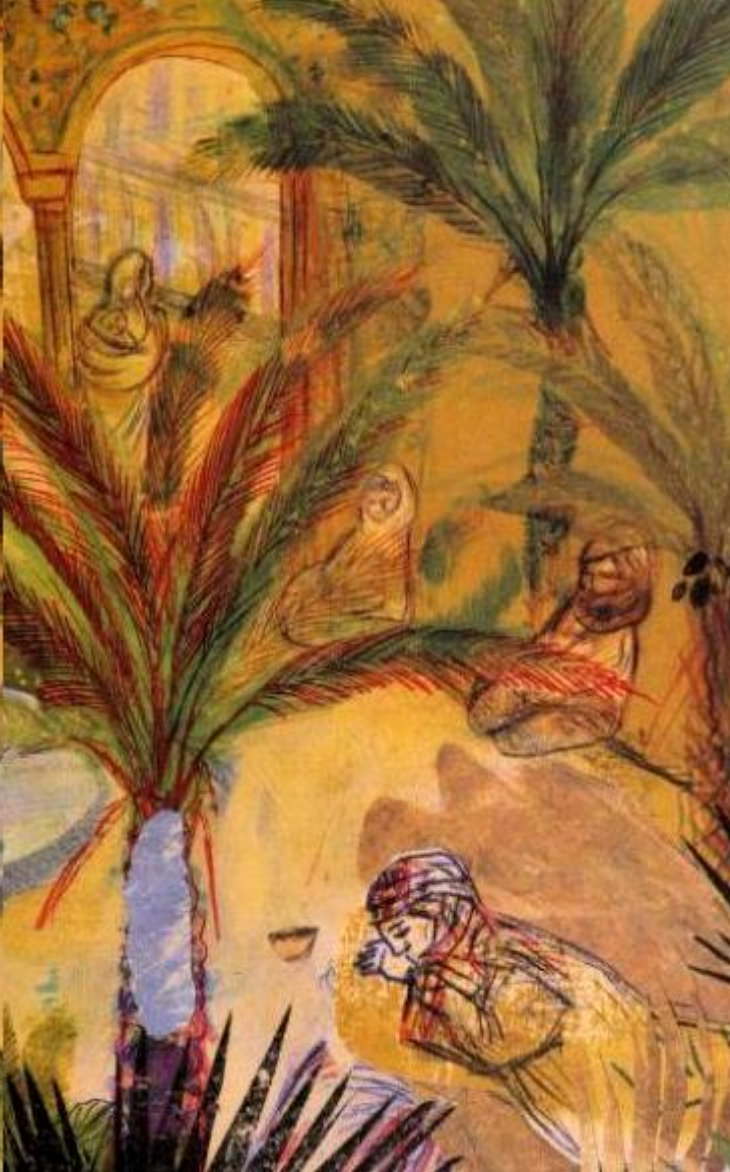
पैगंबर, जो सच में मदीना में रहते थे, उस दुपहर सैर करने निकले थे. वह उस बगीचे के अंदर आये. उन्होंने व्यापारी को छाया में आराम करते देखा.

फिर उन्होंने ऊँट को धूप में स्थिर खड़े देखा. उन्होंने देखा कि ऊँट को जिस तरह खंबे के साथ बाँध रखा था, वह बेचारा मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था और उदास दिखाई दे रहा था.

पैगंबर धूप में चलते हुए सीधा ऊँट के पास आये और उन्होंने ऊँट की गर्दन को अपने आगोश में ले लिया और ऊँट के लंबे, सूखे चेहरे को अपने चेहरे से छुआ. उन्होंने ऊँट की हैरान काली आँखों में देखा और उसको अपने कंधे से सहारा दिया.

ऊँट उनके कंधे पर झुक गया और उसके आंसू निकल आये. अपने दुःख के कारण वह ज़ोर-ज़ोर से सुबकने लगा. उसका सारा शरीर थरथराने लगा- उसी तरह जिस तरह चुपके से रोते हुए जानवर का शरीर थरथराता है.

और फिर कुछ
आश्चर्यजनक हुआ.
ऊँट की आँखों से बहते
आंसू रेत पर गिरे
और, न जाने कैसे,
हलीम के सपने में
आ गये. शीघ्र ही
हलीम ऊँट की
आँखों के भीतर
देख पाने लगा.

ठंडी छाया में सपने देखते हुए, हलीम का दिल उदासी से व्यथित हो गया. उसने पहली बार महसूस किया कि ऊँट बहुत थका हुआ था और उसे बहुत गर्मी लग रही थी. और जैसा ऊँट महसूस कर रहा था, वैसे ही हलीम को लगा कि वह अकेला था और आजीवन कष्ट झेलता रहा था. वहीं लेटे-लेटे वह अपने सपने में रोने लगा. उधर पैगंबर के कंधे पर सिर रख कर ऊँट भी रो रहा था.

अंततः जब ऊँट ने रोना बंद किया पैगंबर थोड़ा पीछे हटे और सोये हुए आदमी को देखने लगे जो अभी भी रो रहा था.

"क्या तुम इस ऊँट के मालिक हो?" उन्होंने पूछा.

"पैगंबर, मैं......" पेड़ के नीचे लेटे हुए उस आदमी ने कहा. लेकिन मायूसी ने उसे घेर लिया, उसके मुंह से कोई बोल न निकले और वह कुछ कह नहीं पाया.

"क्या तुम देख नहीं सकते कि ऊँट कितना उदास है?" पैगंबर ने कहा.

वह आदमी कोई उत्तर न दे पाया. आखिरकार, पैगंबर वहां से धीरे-धीरे चले गये.
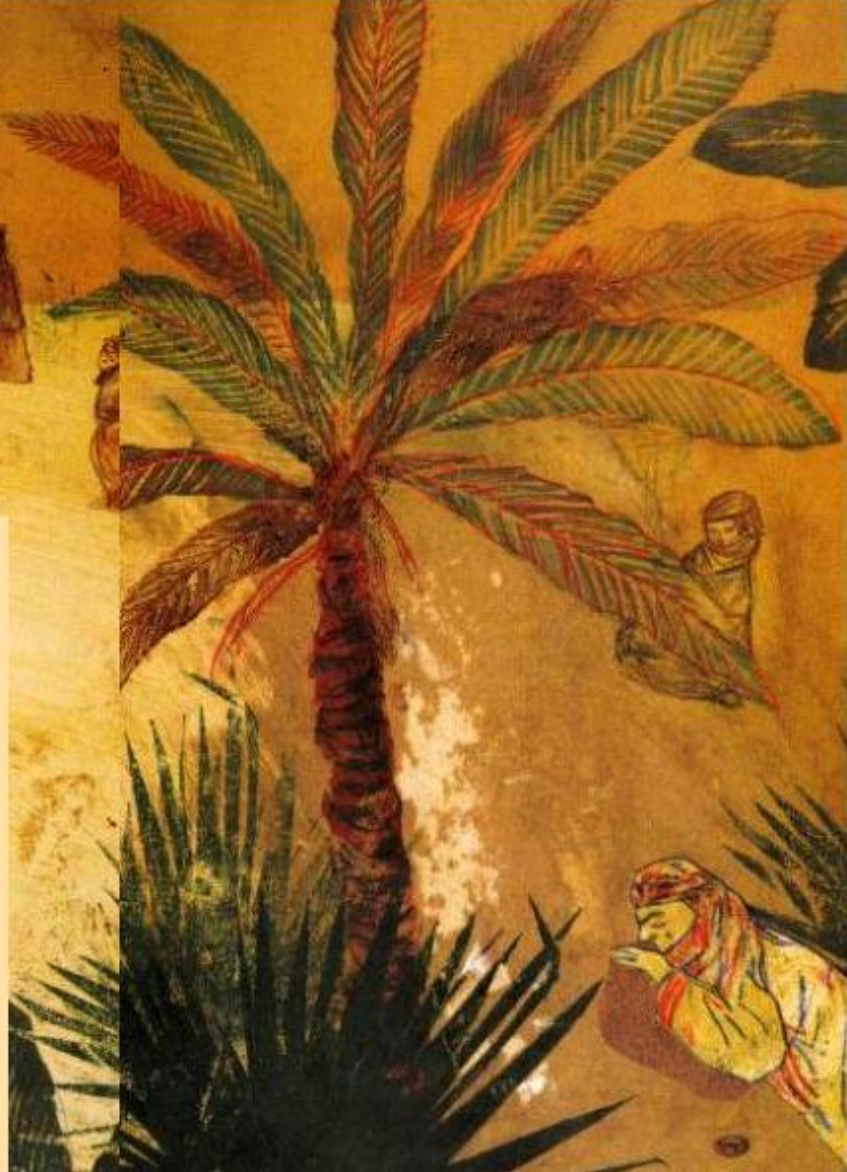
हलीम को लगा कि उसका चेहरा तप रहा था. वह विह्वल हो गया. उसे लगा कि सूर्य की किरणें अनानास के नुकीलें पत्तों के समान उसके चेहरे पर चुभ रही थीं. वह उठ कर बैठ गया. उसने देखा कि ऊँट पैगंबर के ओर देख रहा था.
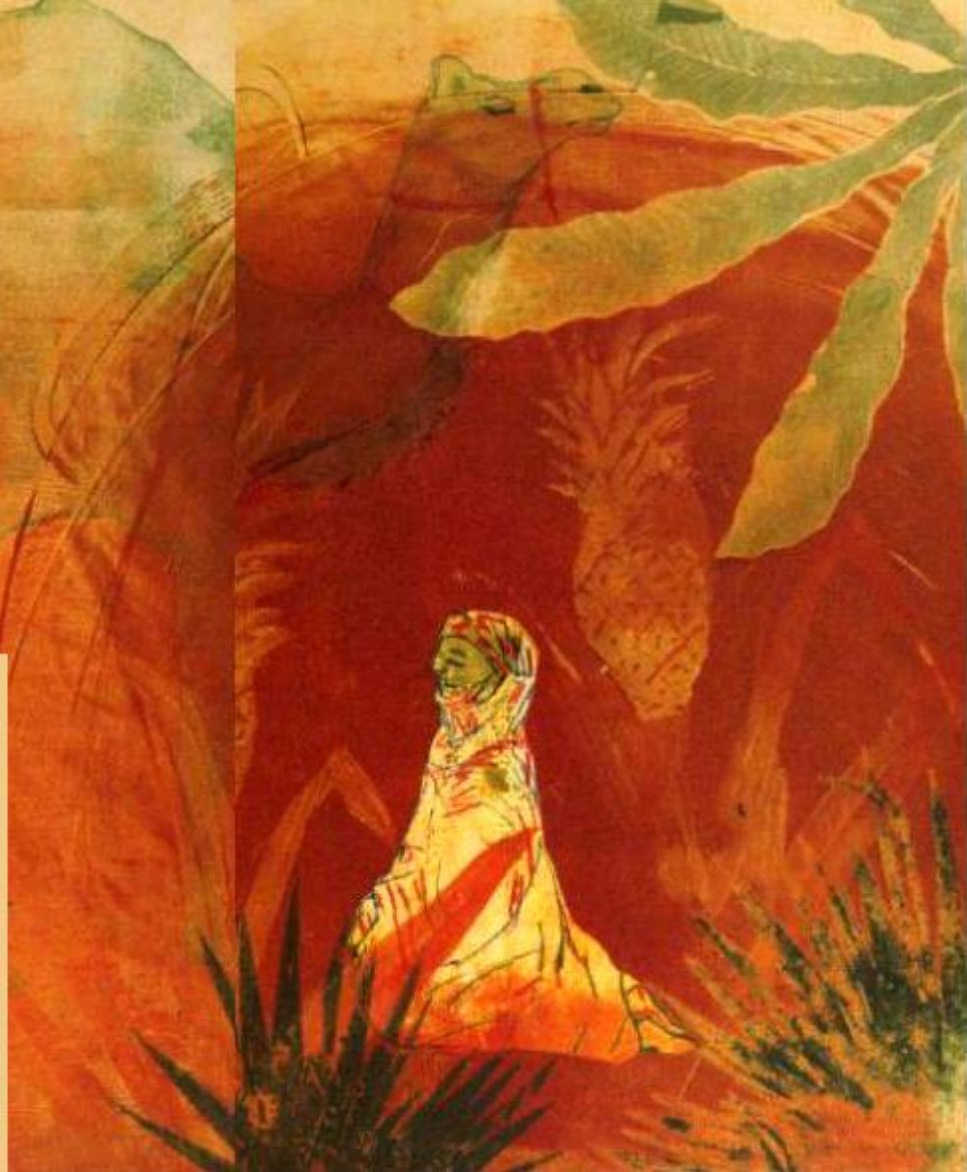
हलीम को उसके चेहरे पर आंसू दिखाई दिये. वह ऊँट के पास आया और उसे खोल दिया. फिर उसने उसकी गर्दन को प्यार से थपथपाया और कुछ देर चुपचाप उसके पास खड़ा रहा. फिर उसने ऊँट को पीने के लिए पानी दिया और प्यार से उसे पेड़ों की छाया के नीचे ले आया.

"आगे जाने से पहले हम थोड़ा विश्राम करेंगे....." उसने धीमे से कहा. "जल्दी करने की कोई आवश्यकता नहीं है.

समाप्त